Ch-2

अहिंसा के दूत

सारांश

- नम्रता की चरम सीमा का नाम ही अहिंसा है। यह भाव हमें संसार के सभी प्राणियों से प्रेम करने की प्रेरणा देता है। हिंसा का बदला, हिंसा से नहीं बल्कि अहिंसा से भी लिया जा सकता है। गांधी जी मन, वचन और कर्म से जीवन पर इसी सिद्धांत का पालन करते रहे। भारत के इतिहास में उन्हें 'अहिंसा के पुजारी' या 'अहिंसा के अवतार' नाम से याद किया जाता है। मन, वचन और शरीर से किसी को कष्ट नहीं पहुंचाना ही अहिंसा है। इसमें कष्टों और दुःखों का सामना करना पड़ता है। अहिंसा का मार्ग अपनाने का यह मतलब कदापि नहीं निकाला जाना चाहिए की अन्याय एवं अत्याचारी को सहकर भी अहिंसा का पालन कर सकते हैं।